अध्याय तीन

मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में स्त्री

अध्याय तीन
मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में स्त्री

सृष्टि की सुंदर इकाई है नारी। वह एक स्वयं सृष्टि हैं। वह मानव सृष्टि का आरंभ है। एम. वेंकटेश्वर के राय में "स्त्री सर्जक और संहारक है, तथा उसका स्वरूप दैवीय और मानवीय दोनों धरातलों पर स्वीकृत है। पौराणिक गाथाओं में स्त्री जननी, पोषक, संरक्षक और संहारक के रूप में वर्णित है।"[1]

समाज में नर और नारी दोनों का अस्तित्व समान है। नारी समाज का हृदय है तो पुरुष समाज का मस्तिष्क। इन दोनों में से एक के बिना समाज का ढाँचा बिखर जाता है। इन दोनों के बीच जब संघर्ष उत्पन्न होता है तब इनका असर घर और समाज में पड़ता है।

क्षमा, त्याग, ममता और करुणा आदि नारी का गुण है। इसलिए ही समाज उनकी तुलना पृथ्वी से करता है। आधुनिक युग के समाज में नारी सभी कार्यों में कंधे से कंथा मिलाकर आगे बढ़ती जा रही है। फिर भी समाज में उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। विभिन्न स्तरों पर समाज में नारी का शोषण हो रहा है। नारी को समाज में जीने के लिए अनेक नियमों का पालन करना पड़ता है। लेकिन ऐसा पुरुषों के लिए नहीं। शारीरिक और मानसिक रूप में वह पुरुष के अधीन होती रही। पुरुष स्वयं अपने को स्त्री का स्वामी कहता है। उन्हें अपनी हाथों की कठपुतली समझता है। भारतीय नारी आज भी पुरुष से अपमानित और लांछित होती आ रही है। पुरुष की दृष्टि में स्त्री की

---

1. पुरुष के जीवन में स्त्री की पात्रता - एम. वेंकटेश्वर - पृ. 27

गौरव का कोई अर्थ नहीं है। मर्यादा और अधिकार के अम्बार की रचना करनेवाले पुरुषों ने स्त्री के साथ हमेशा ही छल और विश्वासाघात कर उसका शोषण किया है। उसके अरमानों का गला घोंट दिया है। अनेक बंधनों में बाँधककर पुरुष ने उसका शोषण किया है।

अधिकार तृप्त पुरुष स्त्री को एक भोग्य वस्तु मानता है। ऐसा मानकर पुरुष स्त्री के व्यक्तित्व और आत्मा का तिरस्कार करता रहा है। तभी तो आजकल की नारी में संघर्ष की भावना आयी है। अपनी इस दयनीयता से आज की स्त्री विद्रोह करने लगी है। पुरुष यह अच्छी तरह से जानता है कि स्त्री जो कुछ भी करे आखिरकार वह स्त्री ही है। सेवा एवं त्याग ही स्त्री का मार्ग है, उसका धर्म है पुरुष की आज्ञा का पालन करना, ऐसा कहकर नारी का शोषण किया जाता है।

साहित्यकार समाज का एक सदस्य है। समाज में घटित घटनाओं को लेकर रचनाएँ करता है। कुछ महिला उपन्यासकार अपने जीवन में घटित घटनाओं को उसी रूप में चित्रण करती हैं। साहित्यिक दृष्टि से उसे स्त्री विमर्श कहा जा रहा हैं। साहित्य में कई साहित्यकारों ने नारी की मनोभावों का चित्रण किया है। उनमें प्रमुख है मेहरुन्निसा परवेज़।

मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपने ज्यादातर उपन्यासों में महिलाओं की शोषित एवं तनावग्रस्त स्थिति को चित्रित किया है। इसलिए उनकी सभी रचनाओं में स्त्री पात्रों को प्रमुखता दी गयी है। इनकी अधिकांश रचनाओं में नारी जीवन की निराशा, अधूरापन आदि को प्रमुखता दिया गया है। इसके साथ-साथ निम्नवर्ग की समस्याओं को भी उसने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। उन्होंने नारी की विविध समस्याओं के साथ कामकाजी महिलाओं की परेशानी को भी अपनी रचनाओं का आधार बनाया है।

मेहरुन्निसाजी समझती है कि पुरुष प्रधान समाज में स्त्री के लिए पर्याप्त स्थान नहीं मिल रहा है। उनके ही शब्दों से यह व्यक्त है। मेहरुन्निसाजी कहती है - 'आज भी मैं समझती हूँ कि जो काम हो रहे हैं, पर्याप्त नहीं हैं। आज भी महिलाओं का जो स्थान मिलना चाहिए, उनके जो हक हैं, उन्हें प्राप्त नहीं है। सिर्फ एक ढकोसला, या समझ लीजिए एक बनावटी रूप से उन्हें सारी चीजें प्राप्त हैं।'[1]

मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यासों में नारी के विविध रूप और उनकी समस्याओं का चित्रण किया है। इसका अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा।

1. नारी जीवन के विभिन्न पहलू

भारतीय समाज में रिश्तों की अहमियत बहुत बडा है। रिश्तों में आजकल बिखराव आ रहा है फिर भी नारी जिस रिश्ते से भी जुडती है वह ज़िंदगी भर उसे निभाती है। माँ, बहन, बेटी, पत्नी, सास, बहु, प्रेयसी आदि भूमिका को वह तन्मयता से निभाती है। कामकाजी स्त्रियाँ अपने कर्म क्षेत्र में दिये गए पदों को भी बखूबी निभाती है कहीं पर स्त्री को दोहरे रिश्ते और कर्तव्यों को निभाते भी देख सकते हैं।

1.1 माँ के रूप में

माँ का रूप नारी जीवन का सबसे सुंदर पहलू है। माँ की तुलना पृथ्वी से हुई है। जो धरती के समान संतान का पालन-पोषण करती है और संतान की सदैव सुख कामना करती है। बच्चों को जन्म देकर उसका पालन पोषण करना, बच्चे गलतियाँ करते हैं तो गलतियों को सुधारकर सही रास्ता दिखाना, हर स्थिति में उसकी रक्षा करना यह सभी मातृत्व का गुण है। मातृत्व ही स्त्री के विकास की चरम सीमा है।

---

1. ऋतुचक्र त्रैमासिक पत्रिका, जून 1982 - विक्रम कुमार से साक्षात्कार - पृ. 45

माँ कभी भी अपने बच्चों को दोष पहुँचाने वाले कार्य नहीं करेंगी। एक स्त्री पत्नी बनने के बाद माँ बनती है। तभी तो वह अपने स्थान को आँच आनेवाले कार्य से मुक्त होने के लिए बच्चों की भी कुर्बानी देने को तैयार हो जाती हैं। 'अकेला पलाश' उपन्यास की नायिका तहमीना की माँ ने अपनी सुरक्षा के लिए तहमीना की आहुति दी। माँ को हर वक्त यह भय रहा कि बाप की हक्स की शिकार बेटी न हो जाय। इसलिए बेटी की ज़िम्मेदारी से अपने को मुक्त करने के लिए पिता के दोस्त से मिलकर योजना बनाती है। उसके अनुसार पिता के दोस्त ने तहमीना की इज्ज़त लूट लिया। यह सब माँ की मौनानुमति से हुआ था। और माँ ने उसी व्यक्ति के साथ तहमीना की शादी करवाई और अपना बोझ उतार दिया। तहमीना अपनी माँ के बारे में सोचती है 'माँ ने अपनी सुरक्षा के लिए तहमीना की आहुती दी और वह सफल रही, क्योंकि तहमीना की शादी के बाद यह एहसास पिता को अधिक हो गया कि अब वह एक शादी-शुदा लड़की के पिता है, उनका एक दामाद भी है, और उनकी अच्छी-बुरी हरकतों का उनकी लड़की के जीवन पर भी असर पड सकता है। माँ यही एहसास पिता को करवाना चाहती थी, उन्हें घर से, अपनी जिम्मेदारियों से बाँध-लेना चाहती थी, और वह इस काम में सफल रहीं।'[1]

यहाँ माँ के एक अलग रूप का चित्रण है जिसमें माँ अपनी जिन्दगी बचाने के लिए अपनी पन्द्रह साल की बेटी की जिन्दगी की आहुति देती है।

इसी उपन्यास में तरु नामक एक पात्र है। वह भी दो बच्चों की माँ है। वह एक ऐसी माँ है, जो अपनी बच्चों का ख्याल नहीं रखती उसे ममता नहीं देती। 'तहमीना चुप सोफे पर बैठी तरु को निहारती रही। पता नहीं क्यों उसे लगने लगा कि यह लड़की दिखने में तो सुन्दर है पर इसके भीतर दूध भरा जहर है जिसे छूते ही हाथ धोने की

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 137

आवश्यकता होती है। तहमीना को एक बात जो बडी विचित्र लग रही थी वह यह कि वह खुद तो बडे सुन्दर ढंग से तैयार होकर आयी थी, पर बच्चों को देख लग रहा था कि वह जैसे खेलते-खेलते साथ हो लिए हैं। बच्चों के प्रति वह उदासीन है, यह बात उसने महसूस कर ली थी।'[1] इससे पता चलता है कि तरु एक माँ होते हुए भी अपनी बच्चों के प्रति कितना उदासीन है।

माँ की जिन्दगी बच्चों के साथ मिली हुई है, वही उसे चलाती है। हँसाती है और रुलाती है। एक माँ हमेशा अपने बच्चों के साथ समझौता करके जीने की कोशिश करती है। बच्चे बडे हो जाते है तो माँ उनसे प्यार और सुरक्षा की आशा रखती है। मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यास 'समरांगण' में माँ के आदर्श रूप का चित्रण किया है। 'समरांगण' उपन्यास की सुहासनी देवी भी अपने बेटे से प्यार और सुरक्षा चाहती है। लेकिन अपने बेटे मोहन से उपेक्षा पाकर सुहासनी देवी सोचती है 'स्त्री माँ बनकर ही उसकी देह की माटी में जो खमीर का मिश्रण होता है, उससे उसके मुख और शरीर पर नई आभा, नई लोनाई नजर आने लगती है। वह त्याग, ममत्व और बलिदान की मूर्ती बन जाती है। माँ बनकर स्त्री देह की परिणति से परे पहूँच जाती है। जीती भी है तो बच्चों के साथ और आत्महत्या भी करती है तो बच्चों के ही साथ, ऐसा विचित्र संबन्ध स्त्री का और किसी से नहीं हो पाता। बच्चों से आँतों का रिश्ता होता है और यही आँतों का रिश्ता जीवन की डोर बन जाता है।'[2] स्त्री तभी पूर्ण होती है जब वह एक माँ बनती है। बच्चे जब बड़े होकर माँ को दुःख देते है तो भी माँ का अपने बच्चों के प्रति जो प्यार और ममता है वह कभी कम नहीं होगा यहाँ भी सुहासनी देवी अपने बेटे मोहन से उपेक्षा पाकर भी उनकी मन में मोहन के लिए प्यार और ममता कम नहीं हुआ।

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 195
2. समरांगण - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 196

जब अपनी बच्चों को कोई पीडा हो तो बच्चों से ज्यादा तकलीफ माँ को होता है। बच्चों में एक पागल हो तो उसकी माँ कितनी तकलीफे सहती होगी? इसका अंदाजा नहीं किया जा सकता। ऐसी ही एक माँ का चित्रण 'कोरजा' उपन्यास में मेहरुन्निसा जी ने चित्रित किया है।

'क्या करूँ, इतना अत्याचार उस पर करते मेरी आत्मा रोती है, मंदाकिनी ने उदास होकर कहा, पता नहीं मेरे बाद उसका क्या होगा? भगवान उसे उठा क्यों नहीं लेता?'[1]

दीपु पागल है और दूसरों को तंग करने के उसके स्वभाव को लेकर उसकी माँ मंदाकिनी दुःखी हो जाती है। बेटे के प्रति मंदाकिनी के वात्सल्य के कारण कमरे में बंद करके रखने को उसका दिल नहीं मानता। इसलिए अपने बेटे को इस कष्ट से बचाने के लिए बेटे की मौत का आग्रह करती है।

इसप्रकार मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यासों में माँ के विविध रूपों का चित्रण किया है।

1.2 बेटी के रूप में

वात्सल्य के क्षेत्र में बेटी अपने माता-पिता का स्नेह भाजन बनती है। बेटी का रिश्ता माँ के लिए बोझ का एहसास दिलाता है तो पिता को अपने उत्तरदायित्व का बोध कराता है। 'अकेला पलाश' उपन्यास में तहमीना की माँ ने अपनी सुरक्षा के लिए और पिता को उत्तरदायित्व का एहसास दिलाने के लिए अपनी बेटी की बली चढ़ा दी। तहमीना की यह विचार साबित करता है कि बेटी माँ-बाप के लिए हमेशा बोझ होती है 'तहमीना

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 129

ने मायके की देहलीज छोडते हुए एक बात नोट कर लिया था कि जीवन में अब यह देहलीज कभी उसे अपनी शरण में नहीं लेगी। ये दरवाजे उसके लिए हमेशा-हमेशा के लिए बंद हो चुके हैं, पराये हो चुके हैं। जीवन में चाहे कितना बुरा से बुरा समय आये, ये दरवाजे उसको कभी शरण नहीं देंगे। बस यही सोचकर उसने कभी अपने कष्ट, अपने जीवन के बारे में माँ-बाप से नहीं कहा। हमेशा एक झूठी हँसी मुख पर चढ़ाये वह जीती रही, क्योंकि वह जानती है कि बचपन से वह अकेली है।'[1] तहमीना समझती थी कि वह एक बेटी होने के कारण अपने माँ-बाप के लिए एक बोझ बन गयी थी। तभी तो उसने अपने मायके छोडते वक्त यह सोच लिया था कि चाहे कितनी भी कष्टताएँ उनकी जीवन में आये, फिर भी वह कभी भी अपनी मायके वापस नहीं आयेंगी।

माँ हमेशा बेटियों की छत्र-छाया देती रहती है। तब उस छाया को कोई छीन लेता है तो वह, दुःख बेटी के लिए असहनीय हो जाती है। 'समरांगण' उपन्यास में गंगा के माँ को बाघ ने खा लिया। उसके बाद बाघ शब्द सुनना भी उसे अच्छा नहीं लगता। 'बाघ की याद आते ही वह पीडा और क्रोध में भर जाती थी। बाघ ने माँ को खाया होगा, तब उसे कितना कष्ट हुआ होगा? कितने कष्ट से, पीडा से उसने प्राण दिए होंगे? माँ की याद आते ही उसकी आँख भीग उठती थी।'[2] इसमें मेहरुन्निसाजी ने बेटी का ऐसा रूप दिखाया है जो अपनी माँ को बेहद प्यार करती थी। 'कोरजा' उपन्यास में भी बेटी के विभिन्न रूपों का चित्रण किया है।

1.3 बहन के रूप में

माँ के बाद स्त्री जीवन का कोमल पक्ष बहन के रूप में दिखलाई पडता है। रक्षाबंधन जैसे त्योहार इस रिश्ते के महत्व को दिखाता है। रिश्तों की अहमियत को सिर्फ

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 103
2. समरांगण - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 259

भारतीय ही समझ पायेंगे। भारत जैसे भाई-बहन के रिश्तों को प्रधानता देनेवाला कोई अन्य देश नहीं होगा। अपने भाई के लिए सब कुछ त्याग करनेवाली बहन का रूप सिर्फ भारत में ही देखने को मिलेगा। मेहरुन्निसाजी के 'कोरजा' उपन्यास में ऐसा ही एक संदर्भ है। "देखो न उम्र कितनी जल्दी खिसक गई, पता नहीं चला। उम्र उन लोगों को पता चलती है जो अपने लिए जीते हैं। अगर अपनी सारी उम्र भी दे सकूँ और अमित को लौटा लाऊँ, उसे सही रास्ता दिखा सकूँ तो अपने को धन्य समझूँगी।"[1]

अमित मोना की भाई है। वह एक शराबी आदमी है। अपने भाई को सही रास्ता दिखाने के लिए मोना अपनी सारी उम्र भी उसके लिए कुर्बान करने को तैयार है। मोना अपने भाई के लिए ही जी रही है। अपने भाई की जिन्दगी सवारना चाहती है। भाई के लिए अपनी जिन्दगी को भी देने के लिए तैयार हुई बहन का रूप यहाँ देख सकते हैं।

कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जिनमें खून का रिश्ता न होने पर भी सगे भाई-बहन की तरह जी रहे हैं। मेहरुन्निसाजी ने ऐसे रिश्तों की पवित्रता को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। 'अकेला पलाश' उपन्यास में तहमीना और विपुल का ऐसा ही भाई-बहन का रिश्ता है। विपुल तरू से प्यार करता है जो तलाक शुदा है और दो बच्चों की माँ भी है। तहमीना विपुल के भविष्य को लेकर चिंतित है। वह तरू से कहती है, "विपुल ऐसा सागर है जहाँ हर मैली नदी गिरकर पवित्र हो जाती है। मगर उस लड़के पर तुम भरपूर ध्यान देना, उसे संभालकर रखना, कोई कष्ट मत देना। मेरा सगा भाई समझो। मेरा सगा समझे तो, पराया समझे तो..... बस वही है। कुछ रिश्ते ऐसे ऐसे होते हैं न, जिनकी अहमियत खून से भी बढ़कर होती है।"[2] अपने भाई की भविष्य के प्रति बहन की आकुलता को यहाँ देख सकते हैं।

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 126
2. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 212

1.4 पत्नी के रूप में

पुराण में कहा गया कि पति पत्नी का मालिक होता है। पति का ख्याल रखना, गृहस्थी करना बच्चों को जन्म देकर उसका पालन-पोषण करना आदि उनका कर्तव्य माना गया है। युग-युगान्तर से यही चलता आ रहा है। स्त्री के स्वामी बनकर घूम रहे पुरुष यह नहीं जानता कि स्त्री के बिना जिन्दगी को आगे बढ़ाना मुश्किल है। नारी हमेशा पुरुष पर आँख मूँदकर विश्वास करती है। 'समरांगण' उपन्यास में सुहासनी देवी भी अपने पति पर आँख मूँदकर विश्वास करती थी। लेकिन जब उन्हें यह पता चलता है कि उसके पति को किसी और औरत के साथ संबन्ध है। तब वह टूट जाती है वह सोचती है "पति चाहे कोई सुख दे या न दे, परन्तु वह पत्नी को पूर्णरूप से प्रेम करता है तो नारी इसको अपना सबसे बडा सौभाग्य मानती है। सारे वैभव हो, वह राजमहल की मालकिन भी क्यों न हो, परंतु यदि पति उसे प्रेम नहीं करता या उसका मन किसी अन्य स्त्री से जुडा हो तो यह उसका सबसे बडा दुर्भाग्य ही होता है। शेष जीवन पाखंड ही होता है। जीते जी भी जीवित नहीं रह पाती। सारा जीवन पति और पत्नी के बीच का जीवन केवल भ्रमों के सहारे ही होता है। जिस दिन भ्रम टूट जाता है। उस दिन सब मिथ्या लगने लगता है।"[1]

पति का दूसरी औरत के साथ संबन्ध की बात सुनकर भी कुछ न कर पानेवाली निस्सहाय पत्नी का चित्रण यहाँ किया गया है।

'अकेला पलाश' उपन्यास में तहमीना की सोच से ही पता चलता है कि वह पत्नी के रूप में असफल रही। 'उसका जीवन भी कैसा है, वह इस घर में सफल गृहिणी है, सफल माँ है, पर वह चाहकर भी सफल पत्नी नहीं बन पाई। चाहकर भी वह जमशेद को कभी पूर्ण रूप से, मन से तन से, जमरोद को पति नहीं मान पायी। जमशेद की यह

---

1. समरांगण - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 146

कमजोरी दोनों के बीच हमेशा दीवार बनी रही।'[1] तहमीना की शादी उसकी पसंद से नहीं हुई थी। वह पति जमशेद को पसंद नहीं करती थी। तभी तो वह जमशेद को पूर्ण रूप से पति नहीं मान पाई। यहीं नहीं वह एक पत्नी होते हुई भी उसे पत्नी का सुख नहीं मिला। और वह इसके लिए तरसती रहती है।

पति कितना भी पीडा दे पत्नी उसे चुपचाप सह लेती है। अपनी गृहस्थी को टूटने से बचाने के लिए वह अपनी जिन्दगी के साथ समझौता करती है। यदि स्त्री अनपढ हो तो उसे मजबूरन पति के साये में रहना पड़ता है। 'कोरजा' उपन्यास में चित्रित नारी पात्र फातमा भी ऐसी ही एक अनपढ़ पत्नी है जिसे पति के सारे करतूतों को अनदेखा कर जीना पड रहा है। "मैं क्यों मायके जाऊँ? बीमार सास है, फिर मायके में मेरा कौन है जो मुझे पालेगा, बूढ़ा बाप है जो अब खुद दूसरों का मोहताज है, वहाँ जाकर क्या करूँगी? वह कहीं रहें - किसी भी औरत के साथ रहे, मुझे आधी तनख्वाह भेज दे बस"[2] एक पत्नी की बेचारगी को यहाँ देख सकते हैं।

1.5 सास-बहु के रूप में

बहु के लिए सास अपनी माँ जैसी ही होती है और सास के लिए बहु अपनी बेटी जैसी। सास की सेवा करना बहु का कर्तव्य होता है। उसी तरह बहु के सुख-दुःख का ख्याल रखना सास का कर्तव्य है। 'समरांगण' उपन्यास में सुहासनी देवी अपनी बहु का अच्छी तरह से ख्याल रखती है। दुःखों में माँ की तरह उन्हें सहलाती है। "तुम दुःखी मत हो बहु, ऐसे लोग मनुष्य नहीं राक्षस है। यह लोग अपना दीन, ईमान तक बेच डालते हैं। जो व्यक्ति अपनी पत्नी को सुख नहीं दे सकता ऐसा व्यक्ति पिशाच की योनी का है।

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 82
2. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 30

ऐसे व्यक्ति को दंड तो भोग्ना ही होता है। तुम चिंता मत करो, काल अपने-आप ऐसे व्यक्ति को दंड देता है; उसका पतन होता ही है।"[1]

सुहासनी जानती है कि पृथा के दुःख का कारण उसका अपना बेटा है। अपने बेटे के बुरी हरकतों के बार में वह जानती है। तब वह बेटे के पक्ष में न बोलकर एक माँ की तरह पृथा को आश्वस्त करती है।

'अकेला पलाश' उपन्यास में भी सास-बहु का चित्रण किया गया है। इसमें सास, बहु के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखती। बल्कि उसे हमेशा दुत्कारती रहती है। "अपनों के प्यार के लिए, स्नेह के लिए, ममता के लिए आदमी इतना बेचारा भी हो सकता है, यह मैंने पहले नहीं जाना था। कुत्तों से भी बुरी गत हो गयी है मेरी। उठते-बैठते ताने सुन-सुनकर कान पक गए है। छुआछूत इतनी मानती है कि बस, मैं मुसलमान लड़की हूँ, इससे मेरे हाथ का हुआ नहीं खाती। मेरी रसोई अलग है, उनकी अलग है एक घर में दो चूल्हे हैं। महेश कहते हैं, तुम माँ की बातों पर ध्यान मत दो, पर कैसे न दूँ? शरीर में ज़रा भी खरोंच लग जाती है तो उसका दर्द सारे शरीर को होता है, एहसास बना होता है न! बस वैसा ही।"[2]

नाहिदबाजी और डॉ. महेश की प्रेमविवाह हुआ था। यह रिश्ता डॉ. महेश की माँ को मनजूर नहीं था। नाहिदबाजी ने अपनी माँ को बचपन में खो दिया था। तभी तो वह अपनी सास की तरफ से ममता चाहती है लेकिन सास है कि हमेशा उसके दिल को चोट पहूँचाती रहती है। नाहिदबाजी मुसलमान लड़की होने के कारण सास उसे पूर्ण रूप से अपनी बहु के रूप में नहीं अपना पायी।

---

1. समरांगण - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 235
2. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 171-172

1.6 प्रेयसी के रूप में

यह नारी का सबसे प्यारा रूप है। नारी जीवन का स्थायी भाव है प्रेम। बचपन से लेकर बूढी होने तक नारी का यह प्रेमभाव देख सकते हैं। बचपन में वह अपने माँ-बाप से प्यार करती है। शादी होने के बाद अपनी पति से प्यार करती है, और माँ बनकर बच्चों से प्यार करती है, दादी या नानी बनकर अपने पोते-पोतियों से प्यार करती है। लेकिन समाज में प्रेमिका के जिस रूप को प्रतिष्ठित किया गया है वह यौवनावस्था में किया हुआ प्रेम है। आजकल प्रेम सिर्फ एक ढोंग हो गया है। प्रेम में पवित्रता नहीं है। लेकिन ऐसी स्त्रियाँ भी है जो प्रेम की पवित्रता को बरकरार रखती है। प्रेमी से बिछुडने पर भी उसी प्रेम की याद में अपनी जिन्दगी गुजारती है। मेहरुन्निसाजी ने 'कोरजा' उपन्यास में ऐसी ही एक प्रेमिका का चित्रण किया है। "नसीमा, कितना अजीब है। बारहा मैं ने समझा कि मैं सब भूल गई हूँ। पर नहीं अपने को बेवजह थकाया। नसीमा, मैं ही गलत हूँ। मैं पिछला कुछ नहीं भुला पाई हूँ। बूँद भर भी नहीं। आज भी मेरा माझी उसी जगह, वही खडा है, जहाँ से मैं चली थी। जहाँ से मैंने उसे छोडा था। इक्कट्ठे इतना प्यार, इतना स्नेह हो सकता है उन बीते हुए दिनों को, गुजरे हुए हादसों को बस एक बार-सिर्फ एक बार और जीने को मन करता है, नसीमा।"[1]

मोना अपनी प्रेमी के मर जाने के बाद भी उसी प्यार की याद में जिन्दगी को आगे ठकेलती है। वह अपनी प्यार को इतने वर्षों के बाद भी भुला नहीं पायी।

कम्मों ने बहुत ही छोटे उम्र में ही अपने माँ-बाप को खो दिये थे। अब वह एक चाची के साथ रह रही है। कम्मो अमित से प्यार करती है। वह जी रही है तो सिर्फ अमित के लिए तभी तो उसकी बुरी आदत को लेकर कम्मो परेशान है। वह अमित से

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 161

कहती है। "तुम जुड़े रहने की बात करते हो अमित, पर तुम्हारी शराब मुझे तुमसे दूर, काफी दूर करती है, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें खो दूँ और सिर्फ हाथ मलती ही रह जाऊँ।"[1] अमित को शराब पीने की बुरी आदत है यह कम्मो को पसंद नहीं है। वह बार-बार अमित से इस आदत को छोडने को कहती है। लेकिन अमित यह छोड नहीं पाता। कम्मो को डर है कि इस आदत के कारण अमित को वह खो देगी और दुनिया में अकेली हो जाऊँगी।

स्त्रियाँ जब प्यार करने लगती है तो सच्चे दिल से करती है लेकिन पुरुष है कि उसे सिर्फ धोखा देता है। उनके साथ प्यार का नाटक करता है। 'अकेला पलाश' उपन्यास में नायिका तहमीना इसी तरह के प्रेमनाटक में फँस जाती है। तुषार तहमीना से प्यार करके अंत में उसे धोखा देकर चला जाता है। "तुम्हें मेरी जिन्दगी में नहीं आना था, मेरा एक मन जहाँ तुमसे बेहद.... बेहद लगाव रखता है, वहाँ दूसरा हारा-थका खीझा मन चाहता है कि तुम मेरी आशाओं को, इच्छाओं को जीवन की अभिलाषाओं को खाली हाथ बिना देखे ही वापस कर दो। मुझे दुनियादार, मतलबी, आत्मलिप्त बनने दो।"[2]

प्यार का पहला कदम तुषार ने ही रखा था। फिर भी बाद में वह ही तहमीना के प्यार को टुकराकर चला गया। अपने उत्तरदायित्व की बातें बनाकर तुषार तहमीना को धोखा दिया।

'समरांगण' उपन्यास में भी लेखिका ने एक प्रेमिका का चित्रण किया है। इस उपन्यास में गोपीलाल अपनी प्रेयसी बूँदाजान को धोखा देता है। जब बूँदाजान को समझ में आया कि गोपीलाल समाज में अपनी इज्जत के बारे में सोचकर उसे छोड रहा है तब

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 87
2. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 165

वह रोष से कहती है, "तुम अब बहुत विचार करने लगे हो, आगे-पीछा सोचने लगे हो? गुस्सा तो आएगा ही न? मैंने तो अपना सारा जीवन तुम पर समर्पित कर दिया था। हम नौटंकीवाले हैं तो क्या, हमारी भी इज्जत होती है, मर्यादाएं होती है। सात्विकता हमारी भी गुण होता है।"[1] गोपीलाल अपनी एक पत्नी होते हुए भी बूँदाजान से प्यार करता है। लेकिन अंत में गोपीलाल अपनी इज्जत के बारे में सोचकर बूदाजान को छोड देता है। यह बूँदाजान को बहुत दुःख पहूँचाती है क्योंकि वह अपनी सारा जीवन गोपीलाल को समर्पित किया था।

2. नारी जीवन की समस्याएँ

नारी को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समस्याओं की शुरुआत घर से ही होता है। बचपन से नारी के सोच-विचार में पाबंद लगा दिया जाता है। स्वतंत्र रूप से सोच-विचार करने तक उन्हें अधिकार नहीं है। विवाह के बाद पति के बने-बनाये नियमों के अनुसार स्त्री को जीना पडता है। किसी भी अवस्था में वह स्वतंत्र नहीं है। मनुस्मृति में लिखा है "स्त्री कभी भी स्वतंत्र नहीं है। बचपन में पिता के संरक्षण में, फिर पति और पुत्र के संरक्षण में रहे। वह कभी भी स्वतंत्र न रहे।" इन धर्मशास्त्रों ने भी नारी की बली चढ़ा दी। आजकल नियम का संरक्षण मिलने पर भी नारी पर हो रहे अत्याचारों में कमी नहीं आया।

वैवाहिक समस्या, दहेज की समस्या, विधवा समस्या, बाल-विवाह, मानसिक शोषण, शारीरिक शोषण, अनमेल विवाह, पति द्वारा अत्याचार, अकेलापन आदि समस्याओं का सामना सिर्फ स्त्रियों को ही करना पड़ता है। इस प्रकार की समस्याओं का चित्रण मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपने उपन्यासों में किया है।

---

1. समरांगण - मेहरुन्निसा परवेज - प. 246

2.1 वैवाहिक समस्या

समाज में लडकियों के जीवन का लक्ष्य ही विवाह माना गया है। आजकल के परिवर्तित समाज में इससे संबन्धित धारणा में बदलाव ज़रूर आया है फिर भी कुछ लोग ऐसे है जो अभी भी इस धारणा को मानते हैं। शादी के उम्र में अगर लडकी की शादी नहीं हुई तो माँ-बाप के लिए वह विकट समस्या बन जाती है। मेहरुन्निसाजी ने 'कोरजा' उपनयास में इसका चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में नानी भी लड़कियों का विवाह ठीक समय पर न होने के कारण चिंतित है। वह सोचती है - "पहले लड़कियाँ जवान होने के पहले ससुराल चली जाती थी और अब उतरती जवानी तक लडकियाँ माँ-बाप के घर बैठी रहती हैं। रिश्तों को क्या हो गया? पहले एक-एक मर्द चार-चार औरतें रखता था। कोई-कोई तो इस्लाम के खिलाफ कई-कई औरतें रखता था, उनके खर्च पूरा करता था, इसलिए लड़कियाँ आसानी से उठ जाती थी पर अब तो एक औरत से ही सारी उम्र कट जाती है। मर्द की वह मर्दानगी सी अब डालडा के जमाने में, नहीं रही। एक औरत को पालना हाथी पालना जैसा था तो चार-चार औरतों को कौन पाल सकता है इसलिए लड़कियाँ बैठी रहती है। पाकिस्तान जब से बना अच्छे लडके सब वहीं भाग गए, चले गए।"[1] 'कोरजा' उपन्यास की स्त्री पात्र नानी एक पुरानी खयालात की स्त्री है। उनकी राय में पहले की तरह मर्द आज भी एक औरत के जगह चार-चार औरतें रख देते तो यह वैवाहिक समस्या समाज में नहीं होती। और नानी यह भी कहती है कि आज की जमाने में मर्द के लिए एक औरत को पालना ही मुश्किल है। इसलिए लड़कियाँ बैठी रहती है।

इसी तरह मेहरुन्निसाजी ने वैवाहिक समस्या का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 142

2.2 दहेज की समस्या

दहेज के कारण लड़कियाँ घरवालों के लिए बोझ बन जाती है। जब एक कन्या का जन्म होता है तब से उसके माँ-बाप को यह चिन्ता सताती रहती है। गरीब घर की लड़कियों को अपनी इच्छानुसार शादी करने की स्वतंत्रता नहीं है। जो उसके किस्मत में लिखा होता है उसीसे संतुष्ट होना पडता है। 'कोरजा' उपन्यास के रब्बो ऐसी ही एक लड़की है जिसे घरवालों द्वारा चुने गये व्यक्ति के साथ शादी करनी पडी। जिस व्यक्ति से वह शादी करनेवाली थी उसका यह दूसरी शादी है और वह दो बडे बच्चों का बाप भी था। शादी से इंकार करने का सुझाव उसकी सहेली कम्मो रखती है तो रब्बो कहती है - "नहीं कम्मो, सुख का इंतजार करते-करते मैं नानी पर बोझ नहीं बनूँगी। गरीब घर की लड़कियाँ जो मिलता है उसे खा लेती है। मेरे नसीब में जो है उसे हँस कर सहूँगी, बस।"[1]

रब्बो एक गरीब घर की लड़की होने के नाते बूढी नानी पर बोझ नहीं बनना चाहती। उसे जो भी नसीब होते हैं उसीमें वह अपनी सुख खोजती है। उसे पता है कि उसको दहेज देकर शादी करने के लिए नानी असमर्थ है। इसलिए वह अपनी आशाओं का गला घोट देती है।

2.3 बाल-विवाह

बाल-विवाह एक ऐसी समस्या है जो लड़कियों की जिंदगी को खतरे में डालती है। जब विवाह की बात आती है तो लड़के की अपेक्षा लड़की के विवाह का विचार माँ-बाप को अधिक होता है। समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए लड़कियों का विवाह कम उम्र में ही कर देना चाहते हैं। इसका एकाधिक उदाहरण मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में मिलता है। 'कोरजा' उपन्यास के अरमान बी अपनी

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 195

बेटी की शादी कम उम्र में ही करा देती है। उसकी ऐय्याशी बाप से बचाने के लिए ही अरमान बी ने ऐसा किया। बेटी बड़ी होते देखकर बाप की वहशी आँखें उस पर पडी। यह सब वक्त की मार खाई अनुभवी औरत अरमान बी देख रही थी - 'फातमा कंधों के ऊपर से सिर निकाल रही है। लड़की बडी हो रही है, यह बात उन्हें खटकने लगी थी। सपाट छाती से अब दूर से ही छोटी-छोटी ऊपर छातियाँ उछल-उछलकर अपने अस्तित्व का बखान कर रही थी। उन्होंने झट से वायल के दुपट्टे से बेटी को ढाँक दिया। वह सतर्क हो उठी और फातमा को जल्दी-से-जल्दी ब्याह दिया।'[1]

अरमान बी ने अपनी और परिवार की लाज समाज में बनाये रखने के लिए अपनी बेटी की शादी छोटी उम्र में ही करा दी गई। अरमान बी को पता था कि अगर लड़की की ब्याह जल्दी नहीं कर पाये तो उसके बाप ही अपनी बेटी की इज्जत लूट लेंगे।

'अकेला पलाश' उपन्यास में भी लेखिका ने बाल-विवाह का चित्रण किया है। 'एक दिन माँ ने देखा कि घर में एक लड़की है जो जवान हो रही है, वह बढ रही है। और इस एहसास ने, इस भय ने, माँ को भीतर ही भीतर डरा दिया, और वह एक बार फिर काँप-सी गयीं। माँ के रोम-रोम में यह भय समा गया कि बाप की हवस की शिकार बेटी न हो जाय, और इस भय ने उनकी रात और दिन की नींद हराम कर दी।'[2]

इस उपन्यास की नायिका तहमीना की बाल-विवाह हुआ था। उनकी पिता एक अय्याशी आदमी थे। उसे अपने घर की चिन्ता नहीं था। अपने पति को उत्तरदायित्व का बोध दिलाने और बेठी को बाप की बुरी नज़र से बचाने के लिए माँ ने तहमीना की आहुती दी। तहमीना को पन्द्रह साल की उम्र में ही अपनी पिता के उम्र वाले व्यक्ति के साथ माँ ने उसका शादी करा दी।

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 20
2. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 100

2.4 अकेलापन

व्यक्ति की मानसिक स्थिति का प्रमुख तत्व है अकेलापन। एकांतता और अकेलापन की परिस्थितियाँ अक्सर व्यक्ति के भावात्मक विकास को रोककर उसे भावी सुख से दूर ही नहीं करती, बल्कि समाज से उसका अलगाव और बढ़ा देती है। 'अकेलापन' का चित्रण मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यासों में किया है। 'अकेला पलाश' उपन्यास की तहमीना की बातों से यह पता चलता है कि वह अपने जीवन में अकेलापन महसूस कर रही है। तहमीना कहती है, "औरत बहुत भूखी होती है तुषार, वह कहीं न कहीं से प्यार चाहती है, ममता चाहती है, और मुझे कहीं से कुछ नहीं मिला, यहाँ तक कि जिन्होंने मुझे पैदा किया उन्होंने भी मुझे ममता, प्यार कुछ नहीं दिया।"[1]

तहमीना को बचपन से लेकर आज तक किसी से भी प्यार नहीं मिला यहाँ तक कि अपने माँ-बाप से भी नहीं। उसकी इच्छा के विरुद्ध उनकी शादी हुई थी तभी तो वैवाहिक जीवन में भी उसे सुख नहीं मिला। दाम्पत्य जीवन में पत्नी हमेशा यह चाहती है कि उनके हर कार्य में पति उसकी सहारा बनकर रहे। लेकिन तहमीना के जीवन में पति उनकी सहारा नहीं बन पायी। तभी तो उसे लगता है कि वह जीवन में अकेली हो गई है, उसका सहारा कोई नहीं है।

मेहरुन्निसाजी के और एक उपन्यास 'समरांगण' में भी अकेलापन का चित्रण मिलता है। इस उपन्यास के नारी पात्र सुहासनी सोच रही है - 'सुहासनी पत्नी बनकर जितना दुःखी रही थी, उतना ही वह मोहन की माँ बनकर सुखी थी, परन्तु भाग्य से उसका यह सुख देखा नहीं गया और मोहन भी उससे दूर चला गया। समस्त वैभव और साधन

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 137

सहित सौभाग्य के बीच वह स्तंभित चकित अपनी रीते आँचल को जड होकर तकती है। इस मंगलकारिणी अभिषेक में क्या उसकी बली चढ़ गई?'[1]

गोपीलाल की पत्नी है सुहासनी। गोपीलाल के जिन्दगी में वैभव आते ही वह बिलकुल बदल गया। और यही नहीं सुहासनी के होते हुए भी वह बूँदाजान से संबन्ध रखता है। इसलिए ही सुहासनी बिलकुल अकेली हो गई। इस अकेलापन में भी उनकी सहारा था उसका बेटा मोहन। लेकिन बडे होते ही मोहन भी अपनी माँ से दूर चला गया। तभी सुहासनी को लगा कि वैभव और साधन सहित सौभाग्य के बीच में वह अकेली खडी है।

2.5 तलाक की समस्या

आधुनिक समाज में दाम्पत्य संबन्धों की विषमताओं के कारण पति-पत्नी जब अलग कर दिया जाता है इसे तलाक कहते हैं। तलाक के बाद युवती अपने बच्चों को लेकर अलग रहने लगे तो समाज उसे चैन से जीने नहीं देता। उसे लेकर मनगढन कहानियाँ कहते हैं। उसे बदचलन तक कहते हैं। इसका चित्रण 'अकेला पलाश' उपन्यास में किया गया है। "जो स्त्री अपने घर से निकल आयी हो, और अकेले बच्चों के साथ रहती हो, ऐसी औरत को तो हमारे समाज के पुरुष लोग सार्वजनिक कुआँ समझते हैं। जिसकी इच्छा हुई, प्यास लगी, पानी पी लिया।"[2]

यह बातें उपन्यास की नायिका तहमीना तरु नामक स्त्री पात्र से कहती है। तरु एक तलाक शुदा युवती है और वह अपने दो बच्चों के साथ एक घर में अकेली रहती है। तहमीना कहती है कि ऐसी स्त्रीयों को लोग गलत नज़र से देखते हैं। हमारे समाज के पुरुष लोग ऐसे स्त्रियों को उनके प्यास बुझाने का सार्वजनिक कुआँ मानते हैं।

---

1. समरांगण - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 193
2. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 212

'कोरजा' उपन्यास में भी तलाक समस्या का चित्रण मिलता है। तलाक की स्थिति पुरुष की अपेक्षा स्त्री के लिए अधिक दर्ददायक होता है। इसलिए स्त्री सभी कष्टों को सहकर पति से समझौता करके जीने की कोशिश करती है। 'मायके से उपेक्षा पाकर फातमा ने पति के घर को ऐसा पकड़कर रखा कि कही छूट न जाए। हमेशा डर रहता कि पति का घर छूट जाएगा तो कहाँ ठौर पाएगी।'[1] इसलिए उसका पति जब उससे तलाक चाहता है तो वह क्रूध होकर कहती है - "मैं कोई भागकर आई हुई लौंडिया नहीं हूँ, चार के सामने ब्याह के आई हूँ। क्यों जाऊँ अपने बाप के घर? यह मेरा घर है, तुम्हें जाना है, जाओ।"[2]

इससे पता चलता है कि नारी सभी यातनाओं को झेल सकती है। लेकिन तलाक नहीं देगी। क्योंकि तलाक के बाद नारी को समाज के दरिन्दों से अपने आप को बचाकर रहना पड़ता है। यहाँ भी इसी डर के कारण फातमा तलाक शब्द सुनकर क्रूध हो जाती है।

2.6 विधवा समस्या

भारतीय समाज में अपनी जिंदगी गुज़ारना विधवा के लिए बहुत दर्ददायक होता है। पति की मृत्यू के बाद वह निस्सहाय और निराश्रित हो जाती है। सामाजिक रूढ़ियाँ उसका जीना मुश्किल कर देता है। इससे वह मज़बूर हो जाती है कि उसकी बाकी की जिन्दगी वेदना और दुःख के साथ बिताने को। पुरुष प्रधान समाज विधवा स्त्रियों का शोषण करता है। इसका उदाहरण मेहरुन्निसा परवेज़ के 'कोरजा' उपन्यास में देख सकते हैं। इस उपन्यास का पात्र साजो खाला एक विधवा स्त्री है। इसके द्वारा मेहरुन्निसाजी ने

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 21
2. वही - पृ. 23

सामाजिक शोषण के नग्न यथार्थ का चित्रण किया है। 'दोनों एक दूसरे से आँखें नहीं मिल पा रही थी। इतनी बड़ी बात? आखिर जुम्मन की हिम्मत कैसे हुई? कहता है, घर में रहने का किराया नहीं लूँगा अगर रोज रात को साजो यहाँ आएगी तब।'[1]

जुम्मन मामू के यहाँ नानी ने मकान और खेत गिरवी रखा है। चाहते तो जुम्मन मामू घर से सब को निकाल सकते थे। घर से सब को न निकलवाने के लिए उन्होंने यह शर्त रखा कि रोज़ रात साजो खाला को उनके घर आना पडेगा। मज़बूर होकर उन्हें यह शर्त मानना पड़ता है और शोषण का शिकार बनती है। यहाँ विधवा नारी का किस तरह समाज शोषण करता है इसका नग्न यथार्थ यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

2.7 नौकरी पेशा नारी की समस्याएँ

कार्यरत नारी को घर और बाहर के कामों को संभालना पड़ता है। इतना सब कुछ करने पर भी उसे केवल थकान और पति के ताने ही मिलते हैं। 'अकेला पलाश' उप्यास में मेहरुन्निसाजी ने नौकरीपेशा नारी की समस्याओं का चित्रण किया है। 'सिर में इतना दर्द हो रहा था कि नींद तो काक आती, पर वह मूँह तक साडी खींचे पडी रही। मन बहुत दुःखी लग रहा था और तरह-तरह के विचार आ रहे थे। कैसे औरतों घर और बाहर दोनों सँभाल पाती होंगी? दोनों तरफ का टेन्शन बर्दाश्त कर कैसे जी पाती होंगी? उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह यह सब छोड देगी? क्या फायदा, इसके कारण घर का सुख जाता रहा तो ऐसे सोशल वर्क से तो घर में बैठना ज़्यादा बेहतर है। वह रात पता नहीं कब तक जागती रही। गली की एक-एक हलचल को चुपचाप सुनती रही, महसूस करती रही, जिंदगी इस तरह एकदम मशीन हो जायेगी, उसने कहाँ सोचा था?'[2]

---

1. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 95
2. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 44

कामकाजी नारी का प्रमुख प्रश्न है घर और बाहर के कामों को संतुलित करके रखना। कभी-कभी ऐसा होता है कि नौकरीपेशा नारी अपनी कामकाज में इतना उलझ जाती है कि वह अपने परिवार की ओर ध्यान देने में असमर्थ हो जाती है। यह परिवार विघटन तक पहूँच जाती है। 'अकेला पलाश' उपन्यास में तहमीना एक नौकरी पेशा नारी है। उसे भी इस तरह की समस्या का सामना करना पड रही है। नौकरीपेशा नारी अपने कामकाज में व्यस्त हो तो उसका प्रभाव पति के मनोवृत्ति पर पडती है। यहाँ तहमीना नौकरी करके थके हुए घर आ जाती है तो पति को अपने मनपसंद खाना न मिलने पर तहमीना से गुस्सा हो जाता है। तभी उसे लगता है कि अगर नौकरी करने से घर का सुख जाना है तो यह नौकरी छोड देना ही बेहतर है। ज्यादातर महिलाएँ तहमीना की तरह ही सोच लेत है। घर का सुख न जाने के लिए अपनी नौकरी छोड देती है।

2.8 अनमेल विवाह की समस्याएँ

कम उम्र की लड़की की शादी अधेड उम्रवाले व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है तो उसे अनमेल विवाह कहते हैं। गरीब घर की लड़कियाँ ही हमेशा इस समस्या का शिकार बनती है। 'अकेला पलाश' उपन्यास की नायिका तहमीना के साथ भी यही हुआ था। अपनी सुरक्षा के लिए माँ ने तहमीना की आहुति दी। पिता के उम्रवाले व्यक्ति के साथ उसकी शादी करा दी। जब तहमीना की शादी हुई थी तब यह शादी का मतलब भी नहीं समझ पा रही थी। बाद में वह उस जिंदगी को अपना नसीब समझकर जी लेती है। 'धीरे-धीरे तहमीना ने समझ लिया कि उसके हिस्से में जितना था उसे मिल गया और अब उसने यह सोच लिया था कि दुनिया में ढेर-सारे सुख हैं, किसी को कुछ मिलता है, किसी को कुछ। सोचने से, दुःख करने से दुःख कम नहीं होते और धीरे-धीरे उसने इन बातों को अपने आप से अलग कर लिया। उसने इस ओर सोचना भी बंद कर लिया। क्या वह

कम है कि वह एक अच्छे व्यक्तित्व, सुन्दर नाक-नक्शेवाली एक युवती है, दुनिया में तो ऐसे भी लोग हैं, जिन्हें यह भी नसीब नहीं है।'[1]

तहमीना की शादी उनकी इच्छा से नहीं हुई थी। तभी तो दाम्पत्य जीवन में वह खुश नहीं थी। समय बीतते ही तहमीना ने अपने मन को समझाया कि सभी को सब सुख नहीं मिलता। दुःखी रहने से दुःख कम भी नहीं होता। इसलिए जो कुछ भी अपनी नसीब में है उसमें सुख ढूढ़ लेना चाहिए।

'समरांगण' उपन्यास में भी ऐसा ही एक संदर्भ है। कम उम्रवाली माधवी की शादी बूढ़े तोतामल हलवाई के साथ करा दिया जाता है। माधवी गरीब घर की लड़की है। इसलिए माता-पिता ने तोतामल-छलवाई से पैसे लेकर अपनी लड़की की शादी उससे करा दी। पैसे की लालच में ही उसकी माँ-बाप ने ऐसा किया था। उन लोगों ने यह नहीं सोचा कि उनकी बेटी की भविष्य क्या होगी? एक अधेड उम्र की व्यक्ति के साथ उनकी वैवाहिक जीवन कैसे होगी?

'कोरजा' उपन्यास के शोना की जिन्दगी भी इससे पृथक नहीं है। पैसे के आकर्षण में शोना का पिता उसकी शादी एक अधेड उम्रवाले व्यक्ति से करा देता है। शोना सिर्फ बारह वर्ष के थे। जिस आयु में उनकी शादी हुई थी तब उसे शादी की मतलब तक नहीं जानती थी।

इसप्रकार मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण मिलता है।

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 102

2.9 शोषण

नारी के प्रति अत्याचार आज व्यापक स्तर पर हो रहा है। शारीरिक और मानसिक रूप से नारी का शोषण होता है। कभी-कभी तो अपने ही लोग उसका शोषण करते हैं। 'अकेला पलाश' उपन्यास में ऐसा ही एक संदर्भ का चित्रण किया गया है। उपन्यास की नायिका तहमीना के माँ की मौजूदगी में ही पिता की उम्रवाला आदमी ने उसकी इज्ज़त लूट लेता है। 'एक रात जब तहमीना आखिरी वाले कमरे में लेटी हुई अपनी कोर्स की किताब पढ रही थी, किसी के आने की आहट पर उसने चौंककर चेहरे के सामने से किताब हटाई तो भयभीत-सी हो गयी, उसका चेहरा सफेद पड़ गया, यह देखकर कि पिता के वह दोस्त उसके कमरे में थे। वह घबराकर कमरे से बाहर जाने की सोचने लगी, क्योंकि उसके पहले उससे कभी बात नहीं की। वह दौड़कर भागनेवाली थी कि बाँस की तरह किसी के हाथ उसकी ओर बढे और उन्होंने उसे दबोच लिया। वह व्यक्ति जो उसके पिता की उम्र का था तथा जिसे उसने कभी शक्ल-सूरत से भी पसंद नहीं किया था, उसी ने उसके कमरे में, उसके अपने घर में, माँ की मौजूदगी में लूट लिया।'[1]

'कोरजा' उपन्यास में भी नारी शोषण का एकाध उदाहरण देखने को मिलता है। इस उपन्यास में रब्बो अपने माता-पिता के निधन के बाद सौतेली माँ के साथ रह रही थी। तब छुट्टियाँ बिताने सौतेली माँ के दूर के रिश्ते का छोटा भाई जमशेद आया। माँ-बेटी दोनों के साथ जमशेद ने प्यार का नाटक किया। रब्बो जमशेद की वासना का शिकार बन गई। 'सुबह जब वह उठकर आता और उसे धीरे से चुपचाप खींचकर प्यार कर लेता और वह सिमटकर चटक जाती, या बाथरूम में जब वह पानी रख रही होती और जमशेद पहूँच जाता। धीरे से उसका हाथ दबा देता या फिर गालों पर चुंबन दे देता और रब्बो की कुँआरी उम्र फडफडा उठती थी।'[2]

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 100-101
2. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 58

नारी का शोषण सिर्फ बाहरवाले ही नहीं अपने ही घर के लोग भी करते हैं या घरवालों की चुप्पी को अनुमति मानकर उसका शोषण बाहरवाले करते हैं। ऊपर दिये गये उदाहरणों में यह व्यक्त है। इन दोनों संदर्भों में माँ की मौनानुमति से बेटी का शारीरिक शोषण हो रहा है।

2.10 अंतर्जातीय विवाह

दो विभिन्न धर्मों में विश्वास रखनेवाले व्यक्ति जब एक दूसरे से शादी करते हैं तो उसे अंतर्जातीय विवाह कहते हैं। अंतर्जातीय विवाह करने से पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक यातनायें भोगनी पड़ती है। अंतर्जातीय विवाह करके जब एक स्त्री ससुराल जाती है तो सास और अन्य लोगों का ताना सुनना पड़ता है। उसे परिवार के अंग के रूप में नहीं स्वीकारते। 'अकेला पलाश' उपन्यास में नाहिदबाजी ने डॉ. महेश के साथ अंतर्जातीय विवाह किया था। जब विवाह के बाद ससुराल आयी तो उसे कई प्रकार के कष्टों को झेलना पडा। "कुत्तों से भी बुरी गत हो गयी है मेरी। उठते-बैठते ताने सुन-सुनकर कान पक गये हैं। छुआछूत इतना मानती हैं कि बस मैं मुसलमान लड़की हूँ, इसलिए मेरे हाथ का छुआ नहीं खाती। मेरी रसोई अलग है, उनकी अलग। एक घर में दो चूल्हे हैं।"[1]

नाहिदबाजी एक मुस्लीम युवती है और डॉ. महेश हिन्दु। दोनों के प्रेमविवाह हुआ था। तभी तो डॉ. महेश की माँ को यह विवाह पसंद नहीं थी। डॉ. महेश की माँ छुआछूत को बहुत माननेवाली औरत है। नाहिदबाजी एक मुसलमान लड़की होने के कारण उसके हाथ का छुआ खाना नहीं खाती। डॉ. महेश की माँ के यह हरकत से नाहिदबाजी बहुत दुःखी है।

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 171

अंतर्जातीय विवाह के परिणाम स्वरूप नारियाँ तनाव की स्थिति में आ जाती है।

2.11 दाम्पत्य सम्बन्धों में आयी शिथिलता

पति-पत्नी का संबन्ध जीवन भर का है। लेकिन जब पत्नी को उसके हक का सुख नहीं मिल पाता तो पत्नी के लिए वह दाम्पत्य विरसतापूर्ण बन जाता है। 'अकेला पलाश' उपन्यास में इसका चित्रण मिलता है। 'जमशेद और तहमीना के जीवन में हमेशा एक फासला रहा, एक ऐसी खाई जिसे दोनों में से कोई कभी नहीं भर पाया। तहमीना जमशेद को देखती, तो अजीब सा लगता। कैसा पुरुष है। यहाँ इसे क्या कभी नारी की, पत्नी की आवश्यकता नहीं होती? कभी दोनों में झगडा हो जाता तो हफ्तों बीत जाते, पर जमशेद खुद से कभी बात नहीं करता और गृहस्थी की जरूरतें तहमीना को जमशेद से बात करने पर मजबूर कर देती। वरना ज़रूरत ही कहाँ थी।'[1]

तहमीना को उसका पति जमशेद ने पत्नी का कोई सुख नहीं दिया। दोनों साथ रहकर भी मन से बहुत दूर थे। कभी-कभी तहमीना सोचती थी कि उसकी पति कैसा पुरुष है, जिसे कभी नारी की, पत्नी की आवश्यकता नहीं होती। तहमीना पति के साथ रहकर भी दाम्पत्य विरसतापूर्ण बन जाता है।

'समरांगण' उपन्यास की नायिका सुहासनी भी दाम्पत्य सुख से वंचित रहती है। 'सुहासनी तिल-तिल करके मर रही थी। पति गोपीलाल इतने दूर चले गए थे जहाँ उनके साथ उनकी आवाज नहीं पहूँचती थी। पति को बस आँधी की तरह आते और जाते देख लेती थी। बीमारी के बाद से उनका कमरा भी अलग करना पड़ा था। पति की कार की आवाज़ से ही वह उनका आना और जाना अनुभव कर लेती थी। पति का भोजन तो

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 81

बाहर ही होता था, बस जब घर में कोई आलीशान दावत का आयोजन होता तभी वह भोजन करते थे।'[1]

गोपीलाल की पत्नी है सुहासनी। गोपीलाल अपनी पत्नी सुहासनी से बहुत प्यार करते थे। लेकिन वैभव आने से वह बदल गया। गोपीलाल धीरे-धीरे अपनी पत्नी से दूर चला गया। वह हमेशा घर के बाहर रहता था। खाना भी बाहर से करके आते थे। सुहासनी अपनी पती को एक बार देखने के लिए तरसती थी। सुहासनी जब बीमार हुई तो उसकी कमरा अलग करना पड़ा। उसकेबाद पति की कार की आवाज़ से ही उसके आना और जाने का अंदाज़ा लगा देती थी। दाम्पत्य सुख से वंचित सुहासनी को पति का साथ भी अप्राप्य था। पति के साथ, पति के घर में रहकर भी पति उसके लिए एक अजनबी था।

3. नारी के बदलते रूप

इस परिवर्तनशील युग में नारी का स्वरूप भी बदल रहा है। उनपर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाना अब उसे आता है। घर के चार दीवारी के अंदर रहनेवाली नारी अब घर से बाहर निकलकर सभी क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कंधे मिलाकर चल रही है। समाज के आगे वह सिर उठाकर खड़ी है। उन पर हो रहे शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना वह जानती है।

आज के युग में नारी अपनी पैरों पर खडी रहना चाहती है। इसके लिए वह नौकरी करना अनिवार्य मानती है। लेकिन घर में इसके लिए अनुकूल परिस्थिति नहीं है तो वह असमंजस की स्थिति में आ जाती है। 'अकेला पलाश' उपन्यास में नायिका

---

1. समरांगण - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 192

तहमीना बाहर काम करनेवाली औरत है। उसको यह भय होता है कि नौकरी करने से उसके घरवाले उससे दूर चले जायेंगे। तब उसके रिश्तेदार नाहिदबाजी उसका आत्मविश्वास बढ़ाती है, "कुछ भी कहो, औरत के बाहर काम करने से उसके मन में आत्मविश्वास आ जाता है। तुम्हारा डर अब धीरे-धीरे खत्म हो जायेगा, और तुम घरेलू और दब्बू किस्म की औरतों की हदों से बाहर आ जाओगी। अब तुम्हें अपना, अपनी शख्सियत का अन्दाज़ा रहेगा।"[1]

तहमीना जब नौकरी करने लगी तो उसे घर के काम और नौकरी दोनों को संभालना मुश्किल लगी। तब नाहिदबाजी, जो उनके रिश्तेदार है उसकी आत्मविश्वास बढ़ाती है। नाहिदबाजी नवीन युग की स्त्री का प्रतीक है। जो निडरता से खुद के बलबूते पर जीना चाहती है। और वह तहमीना को भी ऐसी ही आत्मविश्वास के साथ जीने की सलाह देती है।

नवीन युग के बदलते परिवेश में स्त्री किसी का भी छाया बनकर नहीं रहना चाहती। वह खुद अपनी ही काबिलियत पर जीना चाहती है। 'कोरजा' उपन्यास में मोना दीदी अपने प्रेमी के आकस्मिक मौत के बाद, किसी दूसरे पुरुष के साथ, उसकी छाया में रहना नहीं चाहती थी। वह खुद अपना सहारा बनती है। "ज़रूरत महसूस नहीं हुई, नसीमा, आदमी अब अपना सहारा खुद बन जाए तो उसे दूसरे सहारे की आवश्यकता महसूस नहीं होती।"[2]

मोना एक आदमी से प्यार करती थी। वह दोनों शादी करनेवाले थे। लेकिन मौत ने मोना से उसकी प्रेमी को छीन लिया। अपनी प्रेमी के मौत के बाद मोना दीदी ने

---

1. अकेला पलाश - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 23
2. कोरजा - मेहरुन्निसा परवेज़ - पृ. 159

किसी और पुरुष से शादी नहीं की क्योंकि किसी पुरुष के संरक्षण में जीने की आवश्यकता उसे महसूस नहीं हुआ। अपना संरक्षण वह खुद कर रही थी।

घर के तनावग्रस्त जिन्दगी से मुक्ति पाने के लिए अपने मन को बहलाने के लिए स्त्री घर के बाहर जाकर काम करना चाहती है। 'समरांगण' उपन्यास में पृथा अपने पति द्वारा तिरस्कृत नारी है। पति से पृथा को कभी भी पत्नी होने का अधिकार नहीं मिला। उसका प्यार नहीं मिला। इसलिए वह हमेशा तनाव में रहती थी। इस तनावपूर्ण जीवन से मुक्ति पाने के लिए वह घर से बाहर निकलकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेती है। पृथा को मालूम था कि उसकी यह प्रवृत्ति उसके ससुर और पति को अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी वह निडर होकर इसमें भाग ले लेती है।

निष्कर्ष

उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज़ ने नारी जीवन के संघर्ष को विभिन्न रूपों में चित्रित किया है। स्त्री के विभिन्न पहलुओं के साथ नारी शोषण जैसी समस्याओं को भी अपने उपन्यासों द्वारा व्यक्त किया है। यही नहीं स्त्री के बदलते रूप का भी चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है।

मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यासों द्वारा यह व्यक्त करने की कोशिश की है कि आज की शिक्षित नारी भी विभिन्न तरह के शोषण का शिकार बनती है। पहले उनका शोषण घर के अंतर तक सीमित था क्योंकि वह अशिक्षित थी। इसलिए बाहर निकलने की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन आज के शिक्षित स्त्रियों को बाहर निकलकर काम करनी पड़ती है। इसलिए उन्हें अपने कार्य क्षेत्र में भी शोषण का शिकार बनना पडता है। इन सब का चित्रण मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यासों में किया है।

आजकल के संघर्षशील नारी का चित्रण भी मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यासों में किया है। आज नारी बदलती परिस्थितियों से धैर्य के साथ संघर्ष कर रही है। यह सत्य है कि संपूर्ण नारी-वर्ग अपने ऊपर हो रहे शोषण के विरुद्ध आवाज नहीं उठाती, फिर भी एक छोटा सा समूह ऐसा है जो इन परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष करती है। यह पूरा नारी-वर्ग के लिए गर्व की बात है कि नयी पीढ़ी के कुछ लोग ऐसे है जो पुरानी परंपराओं को तोडकर अपने आत्मसम्मान को बनाये रखने के लिए संघर्ष कर रही है।

अंत में कह सकते हैं कि मेहरुन्निसाजी ने अपने उपन्यासों में नारी पर हो रहे अत्याचार, उनके व्यक्तित्व, उनकी शारीरिक और मानसिक समस्याएँ, उनके बदलते रूप आदि का बहुत प्रभावात्मक रूप से चित्रित किया है। आगे के अध्याय में शोषित वर्ग की समस्याएँ, उनके संस्कृति, आदि का अध्ययन किया जाएगा।